नैषधीयचरितम् में प्रतिबिम्बित ज्योतिषशास्त्रीय तत्त्व

महेन्द्र कुमार शर्मा*
डॉ देवेश कुमार मिश्र**

सारांश -

संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीनतम एवं श्रेष्ठतम भाषा के रूप मे प्रतिष्ठित है। संस्कृत साहित्य में बृहत्त्रयी एवं लघुत्रयी से सभी परिचित हैं। संस्कृत साहित्य के तीन प्रसिद्ध बृहत् महाकाव्यों का संग्रह बृहत्त्रयी एवं तीन सुप्रसिद्ध लघुमहाकाव्यों का संग्रह लघुत्रयी के नाम से विख्यात है। बृहत्त्रयी में महाकवि माघ द्वारा विरचित शिशुपालवधम्, भारविकृत किरातार्जुनीयम् एवं श्रीहर्षरचित नैषधीयचरितम् समाहित होते हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में अनुसंधानकर्ता के द्वारा नैषधीयचरितम् का ज्योतिषशास्त्र विषयक अध्ययन किया गया है।

कुञ्जीशब्द - संस्कृत, महाकाव्य, श्रीहर्ष, नैषधीयचरितम्, महाकाव्य, महाकवि कालिदास, माघ।

संस्कृत की महाकाव्य विधा में श्रीहर्ष द्वारा रचित "नैषधीयचरितम्" महाकाव्य की संस्कृत साहित्याकाश में एक अमिट छाप है। नैषधीयचरित को विद्वज्जनों का औषध कहा गया है - "नैषधे विद्वद्दौषधम्"। इस महाकाव्य में कुल 22 सर्ग हैं। जिनमें से तेरहवें सर्ग में 56 श्लोक, पन्द्रहवें में 93 श्लोक एवं उन्नीसवें में 67 श्लोक हैं; शेष सर्गों में शताधिक श्लोक विद्यमान हैं। जिससे स्पष्ट होता है कि यह एक बृहत् महाकाव्य है। नैषधीयचरित के रचनाकार श्रीहर्ष महाकवि कालिदास एवं माघ से प्रभावित दिखाई देते हैं। जिससे ज्ञात होता है कि श्रीहर्ष इन दोनों महाकवियों के परवर्ती कवि हैं। श्रीहर्ष ने नैषधीयचरित में अपने काल के विषय में स्वयं उल्लेख करते हुए कहा है कि वे कान्यकुब्जेश्वर की सभा में सभापण्डित थे। उन्हें कान्यकुब्जेश्वर की सभा में सम्मानस्वरूप दो पान के बीडे प्राप्त होते थे -

"तांबुलद्वयमासनं च लभते यः कान्यकुब्जेश्वरात्" ॥[1]

[1] नैषधयचरितम्, 22.152

अन्यत्र एक श्लोक में स्वयं अपने माता-पिता का परिचय देते हुए वे कहते हैं कि उनके पिता का नाम श्रीहरि था, तथा उनकी माता का नाम मामल्लदेवी था -

श्रीहर्ष कविराजराजिमुकुटालङ्कारहरिः सुतम्।
श्रीहरिः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च।।[2]

श्रीहर्ष एक उच्चकोटि के विद्वान् कवि थे, नैषधीयचरित जैसे विशालकाय ग्रन्थ को लिखने के लिये न केवल साहित्यिक तत्वों का ज्ञान ही पर्याप्त होता है, अपितु मानव जीवन के विविध पक्षों से सम्बद्ध समस्तविध शास्त्रों का ज्ञान अपेक्षित होता है। नैषधीयचरित के अध्ययन से ज्ञात होता है कि श्रीहर्ष को ज्योतिष शास्त्र का भी समुचित ज्ञान था। नैषधीयचरित में विविध स्थलों पर अनेक बार उन्होंने ज्योतिषशास्त्र के विविध तत्वों का निरूपण भी किया है। इसके फलस्वरूप उनका यह महाकाव्य शास्त्रीय दृष्टि से भी उत्कृष्टता को प्राप्त होता है।

ज्योतिषशास्त्र को वेदपुरुष का नेत्र कहा गया है- 'ज्योतिषामयनं चक्षुः'। ज्योतिष शब्द की व्युत्पत्ति ज्योतिस्+अच् प्रत्यय के योग से निष्पन्न होती है, जिसका अर्थ होता है 'ज्योतिः अस्ति यस्य'। अर्थात् वह शास्त्र जिसमें ज्योतिष्पुञ्जों का अध्ययन किया जाता है, उसे ज्योतिष शास्त्र कहते हैं। अध्ययन की सरलता की दृष्टि से ज्योतिषशास्त्र को तीन स्कन्धों में विभाजित किया जाता है - (१) सिद्धान्त, (२) संहिता एवं (३) होरा। प्रस्तुत शोधपत्र में श्रीहर्ष द्वारा विरचित नैषधीयचरित ग्रन्थ का इन तीनों स्कंधों से सम्बद्ध ज्योतिष शास्त्रीय तत्वों के सन्दर्भ में विवेचन किया गया है।

श्रीहर्ष ने इस ग्रन्थ में अनेक स्थलों पर ज्योतिषीय तत्वों की साम्यता के साथ ही मलयाधिपति, कलि एवं नायिकाओं के विरह के लिए भी चन्द्रमा का उल्लेख किया है। इसके साथ ही पूर्णिमा आदि तिथियों को उपमा एवं श्लेषादि अलङ्कारों में निरूपित किया गया है। एक स्थल पर श्रीहर्ष के द्वारा द्वितीया तिथि का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि जैसे उदित होने वाली चन्द्रकला (द्वितीया तिथि) को उत्कण्ठित कुमुदिनी के पुण्यांकुर से हटा लेते हैं उसी प्रकार तुल्य विमान दण्डधारी वाहक दमयन्ती को जगत् के एकमात्र दीपक होने वाले उस तेजस्वी मेधातिथि राजा से हटा ले गये -

ते तां ततोऽपि चकृषुर्जगदेकदीपा-
देसस्थलस्थित समानविमानदण्डाः।
चण्डद्युतेरुदयिनीमिव चन्द्रलेखां
सोत्कण्ठकैरववनी सुकृतप्ररोहाः॥[3]

ज्योतिष के अनुसार सूर्य एवं चन्द्र के 12 अंशात्मक अन्तर को तिथि कहा जाता है। ज्योतिष शास्त्र में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर कृष्णपक्ष की अमावास्या तक 15+15=30 तिथियां मानी

[2] तत्रैव, 1.145.
[3] नैषधीयचरितम्, 11.81

जाती हैं। शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पहली तिथि से आरम्भ करके पूर्णिमा पन्द्रहवीं तिथि होती है। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा सोलहवीं तिथि एवं अमावस्या को तीसवीं तिथि मानकर एक चान्द्रमास की गणना की जाती है।

इन प्रतिपदादि तिथियों का निरूपण ज्योतिष शास्त्र में निम्नलिखित प्रकार से किया जाता है -

1. प्रतिपदा
2. द्वितीया
3. तृतीया
4. चतुर्थी
5. पञ्चमी
6. षष्ठी
7. सप्तमी
8. अष्टमी
9. नवमी
10. दशमी
11. एकादशी
12. द्वादशी
13. त्रयोदशी
14. चतुर्दशी
15. शुक्लपक्ष- पूर्णिमा / (30) कृष्णपक्ष - अमावास्या

ज्योतिष शास्त्र में इन तिथियों का शुभाशुभ फल निरूपित किया गया है। जिनके आधार पर शुभकार्य केवल शुभ तिथियों में ही किए जाते हैं। अशुभ तिथियों में शुभ कार्य करना निषिद्ध होता है। इनमें किया गया शुभकार्य भी अशुभफल देने वाला होता है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार प्रतिपदा एवं अष्टमी तिथि को अनध्याय तिथि कहा जाता है, अर्थात् इन तिथियों में अध्ययन-अध्यापन से संबंधित कार्य वर्जित होता है। नैषधीयचरित में एक स्थल पर श्रीहर्ष प्रतिपदा तिथि के अनाध्याय होने का उल्लेख किया है। जिसके अन्तर्गत वे कहते हैं कि अपराध करने वाले इस राजा से काम से संतप्त स्त्रियां परुष (निष्ठुर) अक्षर नहीं बोलती हैं। क्योंकि शिवजी के मस्तक पर स्थित प्रतिपदा के चिह्न के चन्द्रमा की एक कला तो उस नगरी से जाती ही नहीं है। इससे उनका परुष अक्षर कहने में अनध्याय होता है -

"आगः शतं विदधतोऽपि समृद्धिकाया
नाधीयते परुषमक्षरमस्य वामाः।

चान्द्री न तत्र हरमौलिशयालुरेका-
ऽऽनध्यायहेतुतिथिकेतुरपेति लेखा ।।[4]

नैषधीयचरित में श्रीहर्ष ने अमावास्या तिथि का भी अनेक स्थलों पर वर्णन किया है। इस महाकाव्य के द्वितीय सर्ग के एक प्रसंग में नल कहते हैं कि हे हंस! यह चन्द्रमा प्रतिमास सूर्य में प्रवेश करता है। सूर्य में प्रवेश करने के कारण उसके संसर्ग से ही क्या यह चन्द्रमा धैर्य को हरण करने वाली अपनी तीव्र ताप वाली किरणों से मुझे जलाता है -

प्रतिमासमसौ निशापतिः खग!
संगच्छति यद्दिनाधिपम्।
किमु तीव्रतरैरसृतः करैर्मम
दाहाय स धैर्यतस्करैः ।।[5]

ज्योतिष शास्त्र के नियमानुसार ग्रहगति के फलस्वरूप जब सूर्य और चन्द्रमा एक ही राशि में हों, अर्थात् दोनों के ग्रह स्पष्ट का अन्तर शून्य हो तो चन्द्र सूर्य के प्रकाश के कारण दिखाई नहीं देता है, इसको अमावास्या के नाम से जाना जाता है।

अतः उपरोक्त श्लोक में श्रीहर्ष भी सूर्य और चन्द्रमा के संसर्ग से अमावस्या तिथि का संकेत करते हैं। उनका आशय है कि चन्द्र शीतल ग्रह माना जाता है फिर भी यह चन्द्र नल को संतप्त करता है । अर्थात् चन्द्रमा भी सूर्य के संसर्ग से ऊष्णता युक्त हो गया है। यहां पर दूसरा पक्ष यह भी मान सकते हैं कि प्रकाश का गुण ऊष्ण होता है और चन्द्रमा सूर्य से ही प्रकाश या ऊष्णता ग्रहण करता है।

श्रीहर्ष ने पूर्णिमा तिथि का भी अनेकत्र उल्लेख किया है। जैसे एक स्थल पर वे कहते हैं कि उस नगरी में स्फटिक से निर्मित घरों की दीवारें पूर्ण चन्द्र के समान निष्कलंक थीं। वे घर पति के उद्देश्य से किए गए नायिका रूपिणी पृथिवी के हास के समान शोभयमान थे -

दयितं प्रति यत्र सन्तता रतिहासा इव रेजिरे भुवः।
स्फटिकोपलविग्रहा गृहाः शशभृद्भित्तनिरंकभित्तयः ॥[6]

वे कुण्डिनपुर के महल श्वेत चमकते हुए रत्नों से अर्थात् स्फटिक मणि से निर्मित होने के कारण चमक रहे थे। महलों के ऊंचे होने के कारण ऐसा प्रतीत होता था मानो वे आकाश का स्पर्श कर रहे हों। प्रकाशमान होने से हंसते हुए से आकाश और पृथिवी के मध्यभाग में होने के कारण ऐसा प्रतीत होता था जैसा पूर्णिमा ही उनमें अतिथि के रूप में निवास करती हो -

सितदीप्रमणिप्रकल्पिते यदगारे हसदंकरोदसि।

---

[4] नैषधयचरितम्, 11.92
[5] नैषधीयचरितम्, 2.58
[6] नैषधीयचरितम्, 2.74

निखिलान्निशि पूर्णिमा तिथिनुपतस्थेऽतिथिरेकिका तिथिः ॥[7]

पूर्णिमा से संबंधित इन उपमायुक्त वर्णनों में भी श्रीहर्ष का ज्योतिषीय ज्ञान झलकता है, क्योंकि पूर्णिमा के दिन का चन्द्र पूर्ण विकसित होता है। ज्योतिष शास्त्र की गणितीय गणना में पूर्णिमा के दिन सूर्य एवं चन्द्रमा के ग्रह स्पष्ट में 180° का अन्तर होता है, ऐसा होने से दोनों एक दूसरे के सम्मुख स्थित होते हैं। ऐसी स्थिति में जब चन्द्रमा पर सूर्य का साक्षात् प्रकाश पड़ता है, तब यह चन्द्रमा पूर्णतया प्रकाशित हो जाता है। जिसके फलस्वरूप इस तिथि को शुभ एवं निष्कलंक माना जाता है।

यहां पर श्रीहर्ष द्वारा प्रदत्त पूर्णिमा के चन्द्रमा की उपमा से यह आशय प्रतीत होता है कि जैसे पृथिवी और आकाश के मध्य में चमकता हुआ पूर्ण प्रकाशित चन्द्रमा तथा कुण्डिनपुर के स्फटिक निर्मित चमकते हुए महल एक समान प्रतीत हो रहे थे। यहां पर पूर्णिमा तिथि को अतिथि के समान कहा गया है, क्योंकि जिस तरह से अतिथि के रूप में कोई व्यक्ति कभी ही बहुत कम हमारे घरों में आते हैं, ऊसी प्रकार पूर्णिमा का चन्द्र भी अतिथि के समान महीने में एक ही बार दिखाई देता है।

इसी प्रकार अधोलिखित श्लोकों में भी श्रीहर्ष ने ज्योतिषशास्त्रीय तत्वों का उल्लेख अनुप्रयोग किया है।

अजस्रमभ्यासमुपेयुषा समं मुदेव देवः कविना बुधेन च।
दधौ पटीयान्समयं नयन्नयं दिनेश्वरश्रीरुदयं दिने दिने ॥[8]

उपर्युक्त पद्य में राजा नल की विषेताओं का वर्णन करते हुए श्रीहर्ष सूर्य, बुध और शुक्र ग्रहों का उल्लेख करते हैं। वे कहते हैं कि राजा नल कार्यकुशल एवं सूर्य के समान तेज वाले हैं। जिस प्रकार सूर्य निरन्तर अपने निकट रहने वाले कवि (शुक्रग्रह) और बुध(ग्रह) के साथ आनन्द के साथ समय व्यतीत करते हुए उदयाचल को प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार राजा नल भी अपने निकट रहने वाले कवि (काव्यकर्ता) और बुध (विद्वान्) के साथ हर्षपूर्वक समय बिताते हुए प्रतिदिन उन्नति को प्राप्त करते थे।

प्रस्तुत पद्य में कवि ने श्लेषपूर्वक कवि शब्द का शुक्र और काव्यकर्ता अर्थ प्रयोग किया है, इसके साथ ही बुध शब्द का चन्द्र पुत्र बुध ग्रह एवं विद्वान् पुरुष अर्थ प्रयोग किया है। इसके साथ ही दिनेश्वरश्री पद में उपमा का प्रयोग करते हुए दिन के स्वामी सूर्य का उल्लेख किया है। इससे कवि की काव्यप्रतिभा के साथ ही ज्योतिर्विद् होने का भी परिचय होता है।

इसी प्रकार एक अन्य पद्य में भी श्रीहर्ष नल के लिए सूर्य की उपमा का प्रयोग करते हुए कहते हैं कि प्रकाश स्वरूप किरणसमूह जिस प्रकार विकसित रक्तकमलों से चिह्नित करकमल वाले तथा

---

[7] नैषधीयचरितम्, 2.76

[8] नैषधीयचरितम्, 1.17

अत्यधिक तेज दौडने वाले सात घोडों से गमन करने वाले भगवान् सूर्य का अनुगमन करते हैं। उसी प्रकार प्रसिद्ध सौन्दर्य वाले राजा नल के घुडसवारों ने स्पष्ट रेखारूप कमलों से चिह्नित करकमल वाले तथा वेग वाले घोडे से यात्रा करने वाले राजा नल का अनुगमन किया -

निजा मयूखा इव तीक्ष्णदीधितिं
स्फुटाऽरविन्दाऽङ्कितपाणिपंकजम्।
तमश्ववारा जवनाऽश्वयायिनं
प्रकाशरूपा मनुजेशमन्वयुः॥[9]

अग्रिम पद्य में श्रीहर्ष कामपीडित दमयन्ती के लिए हेमन्त ऋतु में दिन के एवं ग्रीष्म ऋतु में रात्रि के दीर्घ होने पर आश्चर्य व्यक्त करते हैं -

अहो ! अहोभिर्महिमा हिमागमे-
ऽप्यतिप्रपेदे प्रति तां स्मराऽर्दिताम्।
तपर्तुपूतविपि मेदसां भरा
विभावरीभिर्विभराम्बभूविरे॥[10]

श्रीहर्ष कहते हैं कि अरे! आश्चर्य की बात है कि इस काम पीडिता दमयन्ती के लिए हेमन्त ऋतु में भी दिन इतने लम्बे प्रतीत हो रहे हैं। और ग्रीष्म ऋतु में देखो यह विरह रात्रि कितनी लम्बी प्रतीत हो रही है। ज्योतिष शास्त्र के नियमानुसार हेमन्त ऋतु में दिन छोटे एवं ग्रीष्म ऋतु में रातें छोटी होती हैं। फिर भी दमयन्ती को इसके विपरीत प्रतीत होता है, अतः श्रीहर्ष इससे दमयन्ती की विरहावस्था की ओर संकेत करते हैं क्योंकि काम पीडित विरही जन को अपने प्रियतम से दूर प्रतिपल वर्षों सा प्रतीत होता है। इस पद्य में एक ओर कवि जहां विप्रलम्भ शृङ्गार का प्रयोग करते हैं तो वहीं दूसरी ओर उनके खगोलीय ज्ञान का भी परिचय प्राप्त होता है।

इस प्रकार ज्ञात होता है कि श्रीहर्ष ने नैषधीयचरित में सहजतया ज्योतिष के सिद्धान्त के अनुरूप अनेक स्थलों पर विविध ग्रह तारा आदि का वर्णन किया है। जिसके आधार पर हमें उनके ज्योतिष शास्त्र विषयक ज्ञान का भी अनुमान होता है। उपर्युक्त सन्दर्भों से यह भी स्पष्ट है कि श्रीहर्ष द्वारा विरचित नैषधीयचरित महाकाव्य में ज्योतिष शास्त्रीय तत्वों का यत्र तत्र उल्लेख किया गया है।

*शोधार्थी, **शोध निर्देशक, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविध्यालय ,नई दिल्ली।

[9] नैषधीयचरितम्, 1.65
[10] नैषधीयचरितम्, 1.41.